International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 343-344

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 343-344
www.allresearchjournal.com
Received: 25-02-2017
Accepted: 26-03-2017

आरती
सहायक प्रो0, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय सफीदों- जीन्द, हरियाणा, भारत

Correspondence
आरती
सहायक प्रो0, हिन्दी विभाग, राजकीय महाविद्यालय सफीदों- जीन्द, हरियाणा, भारत

हरियाणा की परम्पराएंः वैश्विक प्रासंगिकता (हरियाणा के साहित्य में जीवन मूल्य)

आरती

प्रस्तावना

''लोक के विरोध में खड़ा होने वाला व्यक्ति रावण हैं। पर जो लोक में रमकर जल बने, बह जाए, वायु बने, सबको शीतल करे, वही राम है। राम और रावण सभी युग में होते आए हैं।''

– 'लक्ष्मीनारायण मिश्रः धरती का हृदय'–

शोध आलेख सारः– लोक साहित्य लोकवार्ता का अभिन्न अंग है। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक लोक साहित्य एक उपेक्षित विषय था। राष्ट्रीय निधि एवं सांस्कृतिक थाती के इस अतुल्य भण्डार को गौरव एवं सम्मान वर्तमान शती में ही मिला है। इसी अमूल्य साहित्य निधि का अभिन्न अंग लोकगीत हैं, जिसकी उत्पत्ति, स्वरूप, परिभाषा एवं सांस्कृतिक महत्व पर प्रकाश डालना अनिवार्य एवं वांछनीय है।

परिचयः– लोक साहित्य एक संजीवनी है, जिसके स्पर्श से मूर्च्छित प्रतिभा पुनः जीवन्त हो उठती है। सूर्य के तेज के समान लोक साहित्य भी हमारे जीवन मूल्य को अपने में समेटे हुए हैं। समय आने पर उन जीवन मूल्य की बौछार सम्पूर्ण विश्व पर करता है। इसका अमृतांजन आंजने से शिक्षा-विमूढ़ वर्ग के प्रज्ञा-युद्ध खुल जाते हैं।

''लोक को परिभाषित करते हुए, डॉ0 सत्येन्द्र ने लिखा है, लोक मनुष्य-समान का वह वर्ग है, जो अभिजात्य संस्कार, शास्त्रीयता और पण्डित्य की चेतना अथवा अंहकार से शून्य है और जो एक परम्परा के प्रवाह में जीवित रहता है।'' [1]

हरियाणा साहित्य में जीवन मूल्यः– हरियाणा के साहित्य का रचना-विद्यान बड़ा लचीला रहा है। यह जनता के हृदय का उद्‌गार है। सर्व साधारण जनता जो कुछ सोचती है, जिन भावों की अनुभूति करती है, उसी का प्रकाशन उसके साहित्य में उपलब्ध होता है। ग्रामीण लोग विभिन्न संस्कारों के अवसर पर लोकगीत गा कर अपना मनोरंजन करते हैं। कहानियाँ सुनना तथा सुनाना उनके मन बहलाव का अनन्य साधन है। अतः हरियाणा के साहित्य में जीवन मूल्य का विवेचन क्रमशः इस प्रकार किया जा सकता है।

(क) लोक जीवन का चित्रणः– ''लोक जीवन की सबसे बड़ी विशेषता उसकी स्वाभाविकता है। इसके वास्तविक रूप को जानने के लिए हमें लोकजीवन के अध्ययन की पहली आवश्यकता है। यह लोक जीवन किसी भी जाति की पृष्ठभूमि और मूल प्रेरणास्थल हैं। यही अवेचन मानस की भांति जाति और समाज के समस्त जीवन को संचालित करता है।'' [2]

हरियाणा लोकसाहित्य में जन सामान्य के जीवन का विस्तृत चित्रण किया गया है। उनके आवास, पनघट और तीज त्यौहारों का मोहक ढंग से वर्णन मिलता है। ''त्यौहारों पर तो यहां के लोकजीवन का यौवन और भी निखर-संवर कर उमड़ आता है। सावण के झूलों पर मुखारित मल्हार तो मन मोहक होती ही है, कितोल कीड़ाओं से आप्लावित फागुन के हुड़दंग का राग रंग भी जीवन्तता का अक्षय आगार जान पड़ता है।'' [3]

(ख) लोकादर्श एवं नैतिक मूल्यों की स्थापनाः–

हरियाणा के लोग गांव में बैठकों, चौंतरों, चौपालों में हुक्के के गिर्द बैठकर खेती-बाड़ी एवं प्रशासन के गुण-दोषों सम्बन्धी चर्चाएं तर्क-वितर्क के साथ मिसालों का दृष्टान्तों के कहकहों की बौछार में करते हैं। इनके लोकादर्श को इन्हीं की कहावत कला के माध्यम से इस प्रकार दर्शाया जा सकता है।

'सादा जीवन उच्च विचार'
तथा सच्ची कहणा सुखी रहणा'

इनके जीवन का सरल सिद्धान्त है। हरियाणा का पारम्परिक आचार समस्त आर्यवर्त के लिए सदैव अनुकरणीय रहा है। अतिथि-सत्कार यहां सर्वथा वन्दनीय माना गया है।

''मात-पिता और सन्त गउ की करणी सेवा चाहिए।
इन चारों के चरण पूज के सुरग लोक नै जाइए।।'' [4]

(ग) प्रेम एवं श्रृंगारिक भावनाओं का चित्रणः- लोकजीवन की अनुरक्ति प्रायः प्रेम एवं श्रृंगारिक भावनाओं में ही अधिक होती है। अतः यौवन का ललाम चित्रण यहां के लोक साहित्य की प्रमुख प्रवृति कही जा सकती है। यही कारण है कि यहां के लोकगीतों में विरह एवं मिलन के प्रसंगों का मार्मिक चित्रण देखने को मिलता है। श्रृंगार का विलास वसन्त की मस्त बहारों में मुखरित हो उठता है। प्रकृति की पुलक के साथ ही नर-नारियों के हृदय में भी कामांकर प्रस्फुटित होने लगते है। प्रेम एवं श्रृंगारिक भावनाएं हृदय के उद्गार से इन स्वरों में फुट पड़ती है -

''इसी गजब की बहू बनूंगी ज्यब सोलहा सिंगार करूं।
गाबरूआं मैं रूक्का पड़ ज्या बुढ़्यां तक भी मार करूं।'' [5]

(घ) राष्ट्रीय भावनाः- भारत भूमि सदियों तक पराधीन रही। देश को आजादी दिलाने में गांधी जी का बहिष्कार और स्वदेशी का प्रचार किया। इस प्रेम में महिलाएँ भी पीछे नहीं हटीं, उन्होंने कंधे से कथा मिलाकर मरदों का साथ दिया।

''तुम बूँद विलायती छोड़ो है सखी, गांधी महात्मा आ रहे हैं।
तुम खदर पहना करो हे सखी, गांधी महात्मा आ रहे हैं।'' [6]

हरियाणा की लोक-मर्यादाओं का चित्रणः- हरियाणवी साहित्य की लोक-मर्यादाओं में पुत्र विवाह को तो चाहे देर-सवेर हा जाए, किन्तु यौवन प्राप्त पुत्री का विवाह समय पर करना अनिवार्य है। इसके लिए जिसके घर जवान बेटी कंवारी हो तो उसे नींद भी नहीं आती और न ही भोजन अच्छा लगता है। पण्डित लखमीचन्द के सांग मीराबाई में इस तथ्य की पुष्टि इस प्रकार की गई है :-

''स्याणी बेटी घरां कुवांरी कुल कै लाणा होगा।
मात-पिता सिर भार चढ़ैं फेर कड़ै ठिकाणा होगा।'' [7]

धार्मिक एवं सामाजिक समन्वयः- आध्यात्मिकता, ज्ञान, योग, वैराग्य, भक्ति आदि के बाद भारतीय संस्कृति की दूसरी बड़ी विशेषता है - धार्मिक एवं सामाजिक समन्वय। इसमें सब धर्मों के प्रति सम्मान और सहिष्णुता का तत्व सर्वोपरि है। सामाजिक समन्वय का होना आवयश्क है।

''बालू घड़ावै फिरंगी को लड़को लूभा जड़ावै नवाब।
ऐसी होली खेलो मिरगांनैणी म्हारा साफा की रखियो लाज।।'' [8]

सुधारवादी काव्यः- हरियाणा का समाज अनेक प्रकार की कुरीतियों, आडम्बरों, अंधविश्वासों एवं संकीर्ण मान्यताओं का शिकार रहा है। इन बुराइयों को दूर करने के लिए यहां के लोकगायकों, भजनोपदेशकों और समाज सुधारकों ने स्तुत्य प्रयास किए हैं। इन प्रचारकों ने सबसे अधिक प्रभावशाली थे पं0 बस्तीराम। उन्होंनें अपने व्यंग्यात्मक गीतों ने सामाजिक कुरीतियों के किले तोड़ने में अभिमन्यु की-सी भूमिका निभाई है। उनकी बहुचर्चित पुस्तक 'पाखण्ड-खण्डी' मानो व्यंग्य वाणों का तूणीर है।

''तन के वस्त्र मत धोना तू, दो घड़ी बैठके रोना तू।
सासू ननद सताया कर, पति को दो बार धमकाया कर।
ससुर जेठ को खुरकाया कर, देवर को डंडा दिखाया कर।
नित तंग पड़ोसियों को रखिए, दिन रात बिराना बुरा तकिए।
किसी से सीधी मत बोलिए तू, प्रभाते घर-घर डोलिए तू।
बस्तीराम जब ये पूरे परहेज निभावैगी, तो मनवांछित फल पावैगी।'' [9]

निष्कर्षः- अन्त में निष्कर्ष स्वरूप कहा जा सकता है कि हरियाणवी साहित्य को पर्याप्त सफलता मिली है। उनमें जहां एक ओर परम्परा-निर्वाह का आग्रह है, वहीं दूसरी ओर सामाजिक, सरोकारों से जुड़कर नवोन्मेषकारी भावों की अभिव्यक्ति का प्रयास भी इन्होंनें किया है। इनके कलात्मक सौंदर्य के साथ जीवन-दर्शन की विराट व्यंजना हुई है, जो कवि-कर्म की सफलता एवं सार्थकता दोनों की द्योतक है। अतः हिन्दी साहित्य को, निस्संकोच हरियाणा की विशिष्ट देन कहा जा सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. डॉ0 सत्येन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान (1962), पृ0 3।
2. डॉ0 सत्येनद्र, लोक साहित्य विज्ञान (1962), पृ0 544।
3. डॉ0 पूर्णचन्द शर्मा, हरियाणा की लोकधर्मी नाट्य परम्परा का आलोचनात्मक अध्ययन, पृ0 9।
4. डॉ0 पूर्ण चन्द शर्मा, हरियाणवी लोकगीतों में सांस्कृतिक अभिव्यक्ति, पृ0 91।
5. डॉ0 शशिभूषण सिंहल तथा सत्यपाल गुप्ता, हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान, पृ0 112।
6. डॉ0 जयभगवान गोयल, हरियाणाः पुरातत्व, इतिहास, संस्कृति, साहित्य एवं लोकवार्ता, पृ0 190।
7. डॉ0 शशिभूषण सिंहल तथा सत्यपाल गुप्ता, हिन्दी साहित्य को हरियाणा का योगदान पृ0 118।
8. डॉ0 भीम सिंह मलिक, हरियाणा लोक साहित्यः सांस्कृतिक सन्दर्भ पृ0 150।
9. डॉ0 पूर्ण चन्द शर्मा, हरियाणवी साहित्य और संस्कृति, पृ0 11।